अध्ययन सामग्री
बी. ए. पार्ट (2)
प्रश्नपत्र - तृतीय
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन महाविद्यालय
वी. कुं. सिं. वि०, आरा

8.07.20

दशकुमारचरितम्

अवन्तिसुन्दरी का चरित्र-चित्रण

अवन्तिसुन्दरी महाकवि दण्डी विरचित 'दशकुमारचरितम्' की नायिका है। वह मालवेश्वर मानसार की कन्या तथा राजवाहन की अर्द्धांगिनी है।

अवन्तिसुन्दरी अनुपम सौन्दर्यवती है। राजवाहन उसकी प्रशंसा में कहता है — "ललनाजनं सृजता विधात्रा नूनमेषा घुणाक्षरन्यायेन निर्मिता नो। चेदब्जभूरेवंविधो निर्माणनिपुणो यदि स्यात्तर्हि तत्समानलावण्यमन्यां तरुणीं किं न करोति?"

अवन्तिसुन्दरी एक मुग्धा नायिका है। वह हाव-भाव का प्रदर्शन जानती है। राजवाहन को देखकर वह क्रीडा बंद करके तत्समयानुरूप नाना भावों को प्रकट करने लगती है।

अवन्तिसुन्दरी में स्त्रियोचित लज्जा पर्याप्त मात्रा में है। वह राजवाहन को देखकर प्रेमाभिभूत हो जाती है और मंद पवन से लता की भाँति काँपने लगती है। राजवाहन द्वारा अनुरागपूर्ण नेत्रों से देखी जाने पर वह स्त्रियों की आड़ में अपने को छिपा लेती है।

अवन्तिसुन्दरी में सामाजिकता की भावना है। विभिन्न उत्सवों के प्रति उसमें पूर्ण उत्साह दृष्टिगत होता है। यही कारण है कि कामोत्सव में भाग लेने के लिए नगर के समीप एक वाटिका में जाती है और वहाँ कामदेव की विधिवत् पूजा करती है। राजकुमारी धार्मिक प्रवृत्ति की है। पूजा सत्कार की विधि उसे पूर्णतया ज्ञात है। वह कामदेव की पूजा वांछित तत्वों से करती है —

"पौरसुन्दरीसमवायसमन्विता कस्यचिच्चूतपोतकस्य छायाशीतले सैकतले गन्धकुसुमहरिद्राक्षतचीनाम्बरादिनानाविधेन परिमलद्रव्य-निकरेण मनोभवमर्च्चयन्ती।"

राजवाहन का सत्कार भी वह उचित वस्तुओं से करती है —

"राजकन्या जितम्भरं कुमारं समुचितासनासीन विधाय सखी हस्तेन शस्तेन गन्धकुसुमाक्षतघनसारताम्बूलादिनानाजातिवस्तु-निचयेन पूजां तस्मै कारयामास।"

अवन्तिसुन्दरी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती है। उपवन में ही राजकुमार को देखकर वह प्रेमासक्त हो जाती है किन्तु सखियों के समक्ष वह अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं करती है। किन्तु एकान्त में वह अपनी अनन्य सहेली बालचन्द्रिका के समक्ष अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त कर देती है —

"लावण्यजितमारो राजकुमारो एवांगदकरो मन्मथ ज्वरा-पहरणे।"

राजकुमारी में धैर्य है पर उद्वेग को रोक पाने की क्षमता नहीं। राजकुमार को देखकर वह राजकुमार का सामीप्य पाना चाहती है जिसे बालचन्द्रिका समझ जाती है। वह राजकुमार के सत्कार के व्याज से राजकुमारी को राजकुमार का सान्निध्य

प्रदान करती है और राजकुमारी प्रसन्नतापूर्वक राजकुमार का आदर-सत्कार करती है।

यद्यपि राजकुमारी युवा है तथापि बालिकासुलभ कुतूहल उसमें पर्याप्त मात्रा में है। सखियों के साथ क्रीडा करना, राजहंस को देख उसको पकड़ने के लिए यत्न जाना, निष्कपट बालिका की भाँति अपनी सखी बालचन्द्रिका से अपने मन की सारी बातों को व्यक्त कर देना -

"तस्मादलमलमायासेन शीतोपचारे। लावण्यं जितमारो राजकुमारो स्वांगदकारो मन्मथज्वरापहरणे। सोऽपि लब्धुमशक्यो मया। किं करोमि ?" उसके निर्बोध स्वभाव को उजागर करता है।

अवन्तिसुन्दरी को अपने कुलवंश की मर्यादा का पूरा ज्ञान था। यद्यपि वह राजवाहन से अतिशय प्रेम करने लगती है तथापि माता के समक्ष वह कोई अनुचित कार्य नहीं करती है और माता के कहने पर उसके साथ ही चली जाती है।

राजकुमारी कोमलहृदया थी। माता के साथ जाते समय वह सोचती है कि राजकुमार मेरे जाने को अन्यथा न समझे इसलिए वह राजहंस के व्याज से उससे क्षमा याचना करती है -- "हे राजहंसकुलतिलकः, विहारवाञ्छया केलिवने मदन्तिकमागत भवन्तमकाण्ड एव विसृज्य मया समुचितमिति जनन्यनुगमनं क्रियते। तदनेन भवन्मनोरागोऽन्यथा मा भूत --"।

प्रिय की झलक पाने से वह अपने आप को रोक नहीं पाती है। स्त्रियों की आड़ में बैठकर वह मूर्तिमान कामदेव सदृश राजवाहन को देखने लगी।

अपनी सखियों के प्रति उसका अपार स्नेह है। अपनी प्रिय वयस्या बालचन्द्रिका को दुःखी देखकर अत्यन्त कष्ट में होते हुए भी अवन्तिसुन्दरी ने अपनी चिन्ताजनक स्थिति का मूल कारण बताया -'किंकर्तव्यतामूढां विषण्णां बालचन्द्रिका-मीषदुन्मीलितेन कटाक्षवीक्षितेन बाष्पकणाकुलेन विरहानलोष्णानि

श्वासगलपिताधरया नताङ्ग्या शनैः शनैः सगद्गद् व्यलापि ——।

अवन्तिसुन्दरी शिक्षिता है। संस्कृत की अन्य स्त्री पात्राओं की भाँति वह प्राकृत नहीं बोलती है अपितु संस्कृत में ही राजवाहन को पत्र लिखती है —

सुभग कुसुमसुकुमार जगदनवद्यं विलोक्य ते रूपम्।
मम मनसमभिलषति त्वं चित्तं कुरु तथा मृदुलम्॥

एक ही श्लोक में उसने अपनी मनोभावना को अनावृत करके रख दिया है।

अवन्तिसुन्दरी के चरित्र में कई त्रुटियाँ भी हैं। यथा उसका चरित्र दृढ़ नहीं है। राजवाहन को देख कर ही वह उससे प्रेम करने लगती है। माता-पिता को बिना सूचना दिए वह राजवाहन से विवाह कर लेती है। अतः "परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः" इसको वह विस्मृत कर देती है।

निष्कर्षतः अवन्तिसुन्दरी मानव अच्छाइयों एवं बुराइयों से युक्त एक जीवन्त यात्रा है। इसके अभाव में दशकुमार चरित का एक अति महत्त्वपूर्ण अंश घट जाएगा। राजकुमारी का चरित्र हर्षित करने वाली मधुरिमा का चित्र है।